पढ़ने में निरंतरता

अभी तक हम पढ़ने और समझकर पढ़ने के परिप्रेक्ष्य में उभरते विचारों और उससे निकली एक विचारधारा को सशक्त रूप देने में प्रयत्नशील रहे हैं। पढ़ने की निरंतरता बच्चों में कायम रहे, ऐसे प्रयास करना जरूरी है। इसके लिए अध्यापक को लगातार पठन से जुड़े रहना होगा और अपने आपको एक 'रीडिंग टीचर' के रूप में देखना होगा। यह निरंतरता बनाए रखने की दिशा में एक ठोस कदम होगा। बालमन की समझ और अर्थपूर्ण पठन की परंपरा हमारे समाज का एक महत्वपूर्ण अंग रही है। इस परंपरा ने हमें बहुत से कुशल पाठक दिए जो प्रभावशाली 'अध्यापक' भी साबित हुए। महात्मा गांधी, जाकिर हुसेन, रवींद्र नाथ टैगोर, मुंशी प्रेमचंद, पं. नेहरू कुछ ऐसे नाम हैं, जो शायद बच्चों के स्कूल में अध्यापक न भी रहे हों परंतु बच्चों की शिक्षा, साहित्य और पठन के महत्व को उन्होंने भलीभांति समझा और बढ़ावा भी दिया।

आज स्कूलों में प्राथमिक शिक्षा का परिदृश्य चिंतित करने वाला है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा किए गए सर्वेक्षण के अनुसार कक्षा पांच तक लगभग एक तिहाई बच्चे स्कूल छोड़ देते हैं।

पढ़ना सिखाने, पढ़ने की ओर बच्चों को आकर्षित करने की प्रक्रिया में अध्यापक की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है। अध्यापक और कक्षा के बच्चों के बीच उसका आत्मीय संबंध इस प्रक्रिया को न केवल सरल बनाता है बल्कि उसे सुदृढ़ भी कर देता है। स्कूल में बच्चों के एक महत्वपूर्ण दौर की शुरूआत होती है। पर उनके घर से स्कूल की यह यात्रा एक स्मरणीय अनुभव न होकर कई बार पलायन का कारण बन जाती है। बच्चों के घर पर पढ़ने का माहौल न मिल पाने के कुछ आर्थिक कारण भी हैं तथा कुछ सामाजिक भी। सुविधावंचित माहौल के बावजूद बच्चा लगातार परिवेश से सीखता रहता है और उसके अपने अनुभव भावनाएं भी बनती रहती हैं। पर स्कूल की संकीर्ण पाठ्यचर्या अपनत्व की कमी, प्यार और दुलार से रहित वातावरण उसे विद्यालय के दायरे से बाहर ले जाता है। अध्यापक को बच्चों के एक साथी के रूप में होना चाहिए पर वास्तविक स्थिति तो यह है कि वे भय का पर्याय बन जाते हैं। कक्षा में फैली चुप्पी, कई बार आत्मीय संबंध बना पाने

में एक बाधा बन जाती है। अध्यापक बच्चों को जब बोलने–बतियाने देते हैं तो स्वयं एक वयस्क मन में छिपे बच्चे को बाहर आने का निमंत्रण देते हैं, उससे बच्चों में आनंद की लहर दौड़ जाती है। भयहीन या मुक्त होने का अहसास होता है। कुछ क्रियाकलाप जैसे कि एक साथ मिलकर गाना सुनना, सुनाना, अभिनय की दुनिया में खो जाना एक आनंद विभोर कर देने वाला अनुभव होता है। बच्चा न केवल अपने अध्यापक के करीब आता है अपितु अपने साथियों, कक्षा और स्कूल में भी एक भावपूर्ण संबंध बना लेता है। इस तरह पढ़ने की एक सुखद यात्रा का शुभारंभ होता है, पुस्तकों से एक आत्मीय संबंध बनता है।

अध्यापक : एक पाठक के रूप में

यह सच है कि पढ़ना–लिखना सिखाने वाले अध्यापकों को स्वयं पढ़ने–लिखने की प्रक्रिया से जुड़े रहना चाहिए। एक शिक्षक जो कि स्वयं पाठक भी है, पठन की एक उत्तम छवि अपनी कक्षा में प्रस्तुत करता है। प्रश्न यह है कि बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करने वाले अध्यापक स्वयं क्या पाठक हैं? क्या पढ़ना उनकी आदत है? पढ़ने का आनंद क्या वे उठाते हैं? ये बहुत ही गंभीर प्रश्न है। प्रायः ऐसा देखा गया है कि अधिकांश अध्यापक पढ़ने में रूचि नहीं रखते और रखते भी हैं तो वे अखबार के मुख्य समाचारों तक सीमित होते हैं। संपादकीय पढ़ना उन्हें नहीं भाता।

विचार कीजिए

- हम शिक्षक क्या पढ़ते हैं?
- क्या हम शिक्षक पढ़ते हैं?
- क्या पढ़ना हमारी आदत है या खाली समय में क्या हम आदतन किताबें उठाते हैं?
- क्या हमें पढ़ने में मज़ा आता है? पढ़ना हमें पसंद है?
- कहानी के अलावा हमें क्या कुछ पढ़ना पसंद है?
- अखबार, पत्रिकाएं– हम क्या–क्या पढ़ते हैं?
- क्या संपादकीय पन्ने की सामग्री पढ़ना हमें रूचिकर लगता है?

- क्या हम गैर कथा साहित्य सहज रूप से पढ़ पाते हैं? (जानकारीपरक और विश्लेषणपरक सामग्री)
- क्या हम पढ़ते हुए अनकही बातों को और लेखक के नज़रिए को माप पाते हैं?
- अपने आस–पास के बारे में हम जो कुछ जानते समझते हैं, क्या पढ़ते समय हम उसका सहारा लेते हैं?

पढ़ते समय पाठ का हम शिक्षकों पर क्या असर होता है?

- हम जो कुछ पढ़ते हैं क्या उसे सुनते भी हैं?
- क्या हम पढ़े हुए को अंतिम सच मानकर स्वीकार कर लेते हैं उससे सदैव सहमत होते हैं?
- क्या हम लेखक की बात पर प्रश्न उठाते हैं, उसे चुनौती देते हैं?
- क्या हममें पढ़े हुए पर अपनी स्पष्ट राय देने का आत्मविश्वास होता है?
- क्या पढ़ना हमारे मन में कई किस्म के सवाल पैदा करता है?
- क्या पढ़ना दुनिया के बारे में हमारी समझ को बेहतर बनाता है?
- क्या पढ़ना हमारी जिज्ञासा को जगता है?
- क्या पढ़ना तरह–तरह की भावनाओं से गुजरने का सफ़र है? (क्या पढ़ना हमें अभिभूत करता है, गुस्सा दिलाता है, हैरान करता है?)

हम शिक्षक कैसे पढ़ते हैं?

- पढ़ते समय क्या हम अक्षरों के माध्यम से शब्दों को पहचानते हैं, शब्दों को जोड़कर क्या वाक्य की छवि अपने मानस में उतारते हैं और तब वाक्य का अर्थ समझने की कोशिश करते हैं?

रास्ते और भी हैं

अनुभव बताते हैं कि अपने विचारों का आदान–प्रदान करने का ज़रिया हम स्वयं तलाशते हैं। इसके लिए शिक्षकों को चाहिए कि वे नियमित रूप से आपस में मिलें, शिक्षा संबंधी मुद्दों पर सोचें, मनन करें, आपस में सूचनाओं, और अपनी कक्षा के अनुभवों को बांटें। अध्यापकों के लिए पढ़ने का समय केवल स्कूल के समय या

कक्षा के समय तक ही सीमित नहीं रहता है। कक्षा में पढ़ने से संबंधित उभरी समस्याओं के समाधान ढूंढने की तत्परता उनमें रहती है। यदि अध्यापक इन समस्याओं को अपने सहकर्मियों से बांटते हैं तो वे न केवल जल्द समस्या का समाधान ढूंढ लेते हैं बल्कि अनुभवाकों का दायरा भी बढ़ा लेते हैं। परंतु क्या अध्यापक अपने पढ़ने के अनुभवों के बारे में सचेत हैं। इसके लिए आवश्यक है कि वे आत्मनिरीक्षण करें।

अध्यापक को अपने पठन क्रिया पठन की समझ बनाने में सहायक होती है। जब वे पढ़ते हैं तो वे कैसे पढ़ते हैं? पाठ में एक अनजान शब्द आ जाने पर क्या वे अपनी स्मृति, अनुभवों का सहारा लेते हैं। नक्शों को पढ़ाते समय या मुश्किल पाठ पढ़ाते समय आप किन विधियों का इस्तेमाल करते हैं। कुछ अध्यापक पठन पर प्रशिक्षण लेने या विशेषज्ञों से विचार–विमर्श करने में विश्वास रखते हैं। कुछ अध्यापकों का यह भी मानना है कि गहराई से आत्मचिंतन करने पर जटिल सवालों के उत्तर उन्हें स्वयं ही मिल जाते हैं। कक्षा में उनकी अपनाई हुई विधियाँ हो सकता है असफल हो जाएं पर ऐसे में वे हताश नहीं होते। वे इस असफलता को सीखने का एक मौका मानते हैं।

पठन को बढ़ावा देने के लिए एक संवेदनशील अध्यापक कई विधियां अपना सकते हैं– जैसे कि अच्छे स्तर की बात सुलभ पुस्तकें बच्चों को उपलब्ध कराना और बच्चों को पाठ्यपुस्तक के अलावा बहुत–सी सामग्री पढ़ने के मौके देना। अक्सर शिक्षकों को एक निश्चित पाठ्यचर्या के बाहर जाने में झिझक होती है और इस झिझक के पीछे कारण होता है– असुरक्षा का भय। वे एक बंधी बंधाई परिपाटी पर चलने में सुरक्षित महसूस करते हैं। बहुधा पाठ्यचर्या से अलग कुछ और न कर पाने की निम्न वजह दी जाती हैं–

- समय की कमी।
- कहां से मिलें किताबें।
- पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकों की बच्चों एवं पाठ्यचर्या के लिए उपयोगिता की समझ न होना।
- मूल्यांकन से इन पुस्तकों को जोड़ने की क्षमता न होना।

- परीक्षा प्रणाली में लचीलापन न होने का दबाव।
- इस तथ्य से बेखबर होना कि अतिरिक्त पठन से बच्चों के सीखने की क्षमता में गुणात्मक सुधार हो सकता है।

दूसरी ओर ऐसा भी देखा गया है कि जब शिक्षकों ने चुनिंदा बाल साहित्य पढ़ा और साहित्य की कुछ कालजयी पुस्तकें पढ़ीं तो उनका उत्साह बहुत स्पष्ट रूप से झलकने लगा और वे बाल–साहित्य को लेकर बहुत उत्साहित हुए। यह सच है कि शिक्षक के लिए यह संभव नहीं कि वह पता करे कि कहां क्या अच्छा छप रहा है। पर वे कुछ तरीके तो अपना ही सकते हैं–

1. प्रकाशकों से पुस्तक सूची मंगवाना।
2. कुछ प्रकाशक, जैसे नेशनल बुक ट्रस्ट, रूम टू रीड ने बुक क्लब बनाए हैं जिनकी सदस्यता आसानी से प्राप्त की जा सकती है।
3. पुस्तक मेलों और चल पुस्तकालयों में बराबर जाना।
4. विद्यालय में पत्रिकाएं मंगवाना।
5. अखबार और पुस्तकालयों में छपी पुस्तक समीक्षाओं को पढ़ना।

शिक्षक अपनी समझ लगातार विकसित करते रहें और पढ़ने को लेकर क्या हो रहा है उसके लिए जागरूक रहें। यदि कंप्यूटर की सुविधा उपलब्ध हो तो इंटरनेट का इस्तेमाल करके पुस्तकों के बारे में जानकारी लें।

पुस्तकालय–पठन की एक कड़ी

पढ़ने की क्षमता शून्य में विकसित नहीं होती है। यदि पढ़ने की क्षमता का उपयोग नहीं किया जाता तो उसका विकास नहीं हो पाता है। पठन में रूचि रखने वाले अध्यापक पुस्तकालय की ओर आकर्षित होते हैं। साहित्य में उनका विशेष नाता बना रहता है। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि स्कूलों में किताबों की अलमारियों में ताले लगे रहते हैं। अध्यापक जब स्वयं नहीं पढ़ रहे हैं तो वे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित नहीं कर पाएंगे। ऐसे में एक विद्यालय 'पढ़ने का माहौल' बनाने में असफल रहता है। ऐसी स्थिति से उबरने के लिए अध्यापकों को स्वयं पठन–पाठन में रूचि रखनी चाहिए। अखबार, पुस्तकें, पत्रिकाएं , नए प्रकाशन सबको पढ़ने की सूची में शामिल करना चाहिए। पुस्तकालयों की सदस्यता बनाएं

रखनी चाहिए। कभी–कभी केवल पुस्तकों को उलटना–पलटना भी आनंदित करता है, पढ़ने की जिज्ञासा को बढ़ाता है।

इस प्रश्न पर विचार कीजिए– क्या आप बाल साहित्य से संबंधित केवल दस पुस्तकों का नाम गिना सकते हैं?

अध्यापक और शोध

वर्तमान संदर्भ में पढ़ने के तरीके पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। पठन के विशेषज्ञ शोधार्थी, शिक्षक इस बात को लेकर सजग हैं कि 'पढ़ना' अपने आप में एक विशेष क्षेत्र है। पढ़ने को लेकर विचारधाराएं, सिद्धांत जिनकी जानकारी इस संदर्शिका में दी गई है, इस तथ्य के साक्षी हैं कि पढ़ने के अनुभव ही पढ़ने की समझ को गहन और विस्तृत करते हैं।

अध्यापक के लिए यह जानना जरूरी है कि उसकी कक्षा की स्थिति क्या है। बच्चों का अलग–अलग परिवेश से आना या फिर एक ही विशेष परिवेश से आना पढ़ने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। परंतु इसके साथ उसका उदारशील होना, यह मानकर चलना कि प्रत्येक बच्चा पढ़ने के कौशल को अपने अंदर महसूस करता है और पढ़ने की योग्यता रखता है, अति अनिवार्य है। अध्यापक एक शोधकर्ता के रूप में जानते हैं कि शुरूआती दौर में बच्चे अलग–अलग तरह से अपने पढ़ने के अनुभवों को व्यक्त करते हैं। इसके लिए अध्यापक एक शोधकर्ता के नज़रिए से जानना चाहेंगे कि–

1. बच्चों के घर पर पढ़ने का कैसा माहौल है?
2. बच्चे क्या किताबें उलटते पलटते हैं?
3. क्या बच्चे सचित्र पुस्तकें समझने में रूचि रख रहे हैं?
4. क्या वे एक–दूसरे को या अध्यापक को कहानी सुनाने के लिए उत्सुक रहते हैं?
5. क्या बच्चे प्रिंट सामग्री के कुछ उदाहरण जैसे कि अखबार से काटी हुई जानवर, फूल इत्यादि की तस्वीरें कक्षा में लाते हैं और उनको आपस में या अध्यापक को दिखाते हैं या उनके बारे में बात करते हैं?

ये सब वे कदम हैं जिन्हें अध्यापक पढ़ने की राह पर अग्रसर होने का सूचक मानते हैं।

पढ़ने की दुनिया में हो रहे शोधों की जानकारी रखना भी उनको जरूरी लगता है। मननशील अध्यापक केवल सिद्धांत पर ही निर्भर नहीं रहते बल्कि पढ़ना उनके लिए एक बहुत ही स्वाभाविक क्रिया होती है। वे न केवल पढ़ने के लिए उत्सुक रहते हैं बल्कि पढ़कर उसे अपने मित्र अध्यापकों से बांटने का आनंद लेते हैं। पाठ्यपुस्तकों के साथ और पाठ्यपुस्तकों से परे भी पढ़ने का एक संसार रचा जा सकता है, ऐसा उनका मानना है। कई बार पढ़ने पर ही आप 'पढ़ने' को लेकर समझ बना पाएंगे।

कई अध्यापकों से बाचतीत और साक्षात्कार में अध्यापकों ने बताया कि स्कूल व्यवस्था उन्हें पढ़ने या शोध करने के लिए प्रेरित नहीं करती। ऐसे में यह कहना उचित होगा कि आप अपनी राहें स्वयं तलाशिए, समूह या गुट बनाइए, जहां मिल–जुलकर काम करने की बहुत संभावनाएं हों, स्थितियों से जूझने का संकल्प हो। कक्षा को एक प्रयोगशाला की तरह भी देखिए। बच्चे ही बहुत कुछ सिखा जाते हैं। महात्मा गांधी द्वारा कही गई कुछ पंक्तियां यहां स्मरणीय हैं। उनका कहना है कि– ''विश्वास कीजिए, मैं सैंकड़ों नहीं, हजारों बच्चों के निजी अनुभव के आधार पर कह रहा हूं कि हमारी अपेक्षा बच्चों में आत्मसम्मान को बड़ी सूक्ष्म अनुभूति होती है। अगर हममें विनम्रता हो तो हम जीवन के महानतम पाठ तथाकथित अबोध बच्चों से सीख सकते हैं उनके लिए बड़ी उम्र के विद्वानों के पास जाने की आवश्यकता नहीं है।'' एक कुशल और उत्साहित शिक्षक क्रियात्मक खोजकर बहुत–सी पठन संबंधी कठिनाइयों का समाधान ढूंढ लेते हैं। कई बार इस तरह शोध के 'हाइपोथीसिस' बनाए जा सकते हैं और यह एक व्यक्तिगत अध्ययन के रूप में भी किया जा सकता है। ऐसा करने पर पढ़ने को लेकर भविष्य की योजनाएं बनाने में स्पष्टता और सहायता दोनों मिल सकती हैं।

लेखन और पठन का सहसंबंध

लेखन का पढ़ने के साथ एक घनिष्ठ संबंध है। यदि पढ़ने के हमारे अनुभव रूचिपूर्ण और सार्थक हैं तो यह निश्चित रूप से एक पाठक को लेखन के लिए भी प्रेरित करेंगे। यह एक बहुत ही स्वाभाविक अनुभव है। पठन में रूचि रखने वाले अध्यापक यह जानते हैं कि लेखन उनके लिए एक सहज प्रक्रिया है। उनकी लेखन क्षमता उनके प्रश्नों में भी झलकती है। कहानियां गढ़ने, लिखने की दक्षता उनमें दिखती है।

नीचे लिखे हुए प्रश्नों पर विचार कीजिए–

1. क्या आप डायरी लिखते हैं या लेखन की सामग्री अपने पास रखते हैं?
2. क्या आप कुछ विशेष अनुभव लिखने की इच्छा रखते हैं?
3. क्या आप रोज़मर्रा के कार्यालयों काम को कुछ अलग ढंग से लिखते हैं?
4. क्या आप कक्षा के बच्चों के लिए भाषा की गतिविधियां बनाते एवं लिखते हैं?
5. क्या आप श्यामपट्ट का प्रयोग करते समय कुछ नया लिखना चाहते हैं?

अध्यापक–एक समीक्षक के रूप में

पठन का मूल्यांकन करना पढ़ना सीखने की प्रक्रिया का एक हिस्सा है। अध्यापक यह जानना चाहते हैं कि बच्चों ने एक कहानी/ किताब को कितनी अच्छी तरह पढ़ा है। इसके लिए दो बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है। बच्चे के पढ़ने का स्तर जो कि लगातार बच्चों के कक्षा में अवलोकन से मापा जा सकता है। दूसरा, किताब या कहानी का अध्यापक द्वारा अवलोकन। इसके लिए ज़रूरी है कि अध्यापक स्वयं उसे पढ़ें।

ऐसा अक्सर देखा गया है कि बच्चे किसी के सिखाने की बजाए खुद सीखना पसंद करते हैं। पढ़ने को लेकर बच्चों का समयक्रम भी अलग होता है। कई बार कुछ बच्चे निर्धारित समय से पहले या बाद में सीखते हैं। यदि अध्यापक को इस बात का ज्ञान है तो वे अधीर नहीं होंगे कि बच्चे पढ़ना सीखने में निर्धारित समय से ज़्यादा समय लगा रहे हैं।

एक अध्यापक जो स्वयं एक पाठक है, भली–भांति जानता है कि सार्थक पठन सामग्री की बच्चों के आस–पास मौजूदगी अति आवश्यक है। एक शिक्षक का बाल पठन सामग्री के प्रति रूझान और समझ का होना बहुत जरूरी है। एक रंग–बिरंगी किताब सदैव एक अच्छी किताब नहीं होती है। किताब की विषयवस्तु सार्थक और बच्चे के लिए रूचिकर हो। अध्यापक को वह सुनिश्चित करना चाहिए कि लिखित सामग्री में अर्थ ढूंढना बच्चे के लिए एक सहज मानसिक प्रक्रिया है। शिक्षक अपने पठन के अनुभवों से यह जानते हैं कि एक कहानी जिसमें वे स्वयं एक पात्र के रूप में उतर जाते हैं, कितनी संतोषजनक और अर्थपूर्ण होती है। पठन सामग्री से एक मौन वार्तालाप करना बच्चों की प्रवृति होती है। ऐसे में बच्चों को

पढ़ने के लिए अच्छी तरह से बुनी, बच्चों की जिंदगी के साथ जुड़ी कहानियां, किताबें देना कितना आवश्यक है।

अध्यापक इस कोश को सदैव बढ़ाते रहते हैं। कहानियों की किताबें अपने आप बनाते हैं, सुनाते हैं, और सुनते हैं। कक्षा की एक मात्र धुरी पाठ्यपुस्तक भी प्रभावहीन हो जाती है। यदि अध्यापक उसे वर्तमान परिवेश से नहीं जोड़ते। उसे रोचक बनाना, उसे बच्चों के लिए उत्साहजनक बनाना अध्यापक की सृजनात्मक क्रियाशीलता पर निर्भर करता है। उन्हें बाल साहित्य की समीक्षा करने की आवश्यकता भी महसूस होती हैं वे यह भी जानते हैं कि ऐसी समीक्षाएं अपनी समझ को बढ़ाने के लिए अतिआवश्यक हैं।

अध्यापक जानते हैं कि पढ़ने के दायरे को कैसे बढ़ाया जा सकता है या फिर यह कहें कि अलग–अलग भाषा बोलने वाले और विभिन्न संस्कृति से आए नन्हें पाठकों को कैसे पठन सामग्री से जोड़ा जा सकता है। एक पुस्तक से नन्हें पाठकों को बहुत आशाएं होती हैं। अपनी संस्कृति या भाषा से जुड़ी विषय–वस्तु पा जाने पर उन्हें आत्मीयता का एहसास होता है। ऐसे में अध्यापक पढ़ने के लिए उन पुस्तकों का चुनाव कर सकते हैं जिसमें बहुभाषीय और बहुसांस्कृतिक झलकियां मिलती हों। गुरूदेव रवींद्रनाथ का कहना था कि सौंदर्यबोध का परिचय अच्छी पठन सामग्री से होता है एक बालक पाठक अपने अंदर सौंदर्यबोध की अनुभूति संजोए रहता है और एक अच्छी पठन सामग्री न केवल उसको उजागर करती है बल्कि उसे बढ़ावा भी देती है। पुस्तकों को पढ़ना और उसके कथानक में अपना स्थान बना लेना पढ़ने की प्रक्रिया का एक सुंदर हिस्सा है। यह प्रक्रिया पाठक में आत्मविश्वास जगाती है, अपने अस्तित्व से परिचय कराती है तथा दूसरे के अस्तित्व को समझने के लिए प्रेरक एवं सहायक होती है।

पढ़ने का एक और पहलू है– आनंद

एक अध्ययन के दौरान कुछ वयस्कों और अध्यापकों से पूछा गया कि वे क्यों पढ़ते हैं? ज्यादातर लोग जो कहानियां या उपन्यास पढ़ते हैं उनका कहना था कि पढ़ने में उन्हें आनंद का अनुभव होता है। मज़ा आता है। पर प्रश्न यह है कि यह आनंद और मजा क्या है– यह तो बढ़िया खाने में भी आता है आखिर है क्या यह पढ़ने का आनंद। शायद लेखक सी.एस. लूएस का एक कथन कुछ हद तक

हमें संतुष्ट कर सके। उनका कहना है कि ''जब मैं किताबें पढ़ता हूं तो कई किरदार जीता हूं। मैं एक नहीं रह जाता बल्कि हजार व्यक्तित्वों में अपने आप को देखता हूं।'' सच ही तो है विविधता के आनंद का अनुभव ही तो पढ़ने में मिलता है। एक 'रीडिंग टीचर' इस पढ़ने के आनंद को समझ सकता है। ऐसे में वह कक्षा में एक ऐसा वातावरण सहज रूप से निर्मित करता है जो कि किस्से–कहानियों से लबरेज़ होता है। क्योंकि वह जानता है कि यही वे कड़ियां हैं जो एक नन्हें पाठक को पठन की दुनिया से जोड़ती हैं। यहीं से निकलता है 'अर्थ' और पढ़ने का आनंद। यहां याद आती है एन्तोन चेख़व द्वारा लिखित कहानी 'द बेट' जिसके एक किरदार को शर्त हार जाने के कारण पंद्रह साल तक गृह कैद में रहना पड़ा। उनकी केवल एक मांग थी कि उनको पढ़ने के लिए किताबें हमेंशा मिलती रहें। उनका कहना था कि पंद्रह साल तक वे बाहरी दुनिया को नहीं देख सके क्योंकि वे एक घर में कैद थे, परंतु किताबों ने उन्हें वास्तविक दुनिया, जो उनकी पहुंच से दूर थी उसके करीब पहुंचाया।

कुशल पाठक पढ़ने की निरंतरता को बनाए रखते हैं। वे जानते हैं कि यह एक ऐसा कौशल है जिसका विकास उम्र भर चलता रहता है। वास्तव में इस कौशल में परिपक्वता उम्र की परिपक्वता के साथ आती है। जब पाठक अपने जीवन की पृष्ठभूमि में उपजे अनुभवों को संजोकर पठन सामग्री – उपन्यास या कहानी – की समीक्षा करते हैं तो उनका आनंदित हो जाना स्वाभाविक होता है। हमारे अध्यापक इस अनुभव से अछूते न रहें, ऐसे में उन्हें पढ़ने की खुराक से वंचित नहीं रहना चाहिए।

लेखिका नटाली बेबीट का कहना है कि एक किताब जब छप जाती है तो गिरगिट की तरह व्यवहार करती है। यानी पाठक उसे अपनी समझ और अनुभव के आधार पर समझते हैं और उसका विश्लेषण करते हैं। पठन में रूचि रखने वाले अध्यापक नटाली के कथन से सहमत होंगे। वे जानते हैं कि पुस्तक की एक और सिर्फ़ एक व्याख्या होना असंभव ही है। पर क्या अध्यापक पढ़ने के इस पहलू को कक्षा में आजमाते हैं। क्या बच्चों को अपनी–अपनी व्याख्याएं कहने की स्वतंत्रता देते हैं? बच्चों की दुनिया में प्रवेश करने का यह बहुत अच्छा मौका है। एक अध्यापक

के लिए सबसे ज्यादा प्रसन्नता की बात है कि वह बाल मन को समझें। रीडिंग टीचर कभी नहीं चाहेंगे कि बच्चे उनकी नजर से दुनिया को देखें।

यह बात लगभग तय है कि हम सिर्फ ज़रूरत के लिए ही नहीं पढ़ते हैं। पढ़ना हमारी आदत और संस्कृति का एक हिस्सा है। अध्यापकों से समाज की अपेक्षाएँ अधिक होती हैं। कई बार तो अध्यापक और पढ़ना पर्याय ही होते हैं। ऐसे में मनोभाषाविद् फ्रैंक स्मिथ द्वारा कही गई बात उपयुक्त लगती है। उनका कहना है कि पठन में रूचि रखने वाले व्यक्ति (हमारा तात्पर्य यहां अध्यापकों से है) एक 'रीडिंग क्लब' के सदस्य जैसे होते हैं जिनके लिए किताबें पढ़ना, समय–सारणी में महत्वपूर्ण स्थान पर होता है। क्लब के सभी सदस्य किताबें खरीदते हैं, एक दूसरे को देते हैं। पढ़ने का एक खास शौक रखते हैं। पढ़ने के मौके खोजते हैं। क्लब के सदस्यों में किताबों पर चर्चा करने की उत्सुकता बनी रहती है। व्यस्तताओं के बावजूद वे पढ़ने का समय निकाल ही लेते हैं।

पढ़ने की समझ
NCERT Reading Cell